

## भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 29-09-2026

### बिहार में एल-नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

सितंबर माह के अंतिम सप्ताह में भी, जून से लेकर अब तक, राज्य में केवल 676.1 मिमी ही वर्षा दर्ज की गई, जो कि सामान्य से लगभग 32% कम है। सीवान, बक्सर, औरंगाबाद, गया, लखीसराय और खगड़िया को छोड़ कर, राज्य के सभी 32 जिले वर्षा की कमी से जूझ रहे हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) पटना केंद्र के अनुसार, आने वाले 5 दिनों में राज्य के अधिकतम और न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। इस सप्ताह में अधिकांश दिन मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना है। राज्य में एक-दो स्थानों पर छुटपुट वर्षा हो सकती है। सप्ताह के अंत तक, उत्तरी बिहार के कुछ जिलों में एक-दो स्थानों पर तेज हवा (गति- 30-40 किमी/ घंटा) चलने की संभावना है। इस स्थिति में, खरीफ की फसलों और पशुधन को होने वाले संभावित नुकसान से बचाने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- खेत की सिंचाई तभी करें, जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखने लगें। खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गीला और सूखा' (AWD) सिंचाई पद्धति को अपनाएं।
- कम वर्षा की स्थिति में जल संचयन संरचनाओं जैसे तालाब, रिचार्ज पिट आदि में संग्रहित जल का उपयोग सिंचाई के लिए करें।
- धान की फसल में, प्रजनन वृद्धि के महत्वपूर्ण चरण जैसे बाली बनना/ निकालना और फूल आना/ पुष्पन (सबसे संवेदनशील चरण) की अवस्था में एक सिंचाई अवश्य करें।
- वृद्धि के इन चरणों पर पानी की कमी के कारण आने वाले तनाव (जैसे सूखा/पोषण की कमी) से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% (20 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेथियम क्लोराइड / 0.5%-1% (5-10 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेथियम नाइट्रेट के घोल का छिड़काव करें।
- बारिश या सिंचाई के बाद ही फसलों को पोषक तत्व दें और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने पर 0.5% (5 ग्राम प्रति लीटर पानी) जिंक सल्फेट का छिड़काव करें।
- अरहर की फसल में भी, प्रजनन वृद्धि के महत्वपूर्ण चरण - पुष्पन की अवस्था पर एक सिंचाई अवश्य करें। और पानी की कमी के कारण आने वाले तनाव से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% (20 ग्राम प्रति लीटर पानी) डीएपी के घोल का छिड़काव करें।
- मक्का की फसल में भी, सूखे से बचाव के लिए पत्तियों पर 0.5% (5 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेथियम नाइट्रेट और 0.5% (5 ग्राम प्रति लीटर पानी) जिंक सल्फेट के घोल का छिड़काव करें।
- संभावित सूखे की स्थिति में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें।
- रोग-ग्रस्त पौधों को हटाएं और आवश्यकता पड़ने पर गंभीर स्थितियों में ही अनुमोदित दवा की अनुशंसित मात्रा का प्रयोग करें।
- सब्जी वर्गीय फसलों में मल्लिंग (पलवार) का प्रयोग करें, इससे कम बारिश की स्थिति में खेत में उचित नमी बनाये रखने में मदद होती है।
- कीट प्रबंधन के लिए खेतों में फेरोमोन और स्टिकी ट्रैप लगाएं।
- सरसों की समय से बुवाई के लिए (उचित समय- 15 अक्टूबर से 15 नवंबर), पूसा सरसों- 28, पूसा सरसों- 30, पूसा केसरी-5111 किस्म का चयन कर सकते हैं। इसके लिए मिट्टी में उचित नमी

होने पर समय पर खेत की तैयारी कर लें, संतुलित उर्वरक का प्रयोग करें, उचित बीज दर एवं कतार दूरी अपनाएं।

- पशुओं के लिए हर समय स्वच्छ एवं पर्याप्त मात्रा में पेयजल की उपलब्धता बनाए रखें।